रिकार्डः—यही बहार है..... ॐ पिताश्री 8/6/62
ओमशान्ति। निश्चयबुद्धि बच्चे जानते हैं कि हम बाप के सामने बैठे हैं। तुम हो जीवात्माएँ। तुम्हारा शिवबाबा कहते हैं तुम मेरे सामने बैठे हो। ऊँच ते ऊँच मत लेनी है। इस मत से क्या होगा? तुम ऊँच ते ऊँच देवी—देवता पद पावेंगे। वो है सभी का बाप और तुम जानते हो जिन्होंने कल्प पहले जाना था, पहचाना था, बाबा का वर्सा लिया था उनकी श्रीमत द्वारा वो ही अभी लेंगे। उस भगवान की अभी तुम मत ले रहे हो और कोई की भी मत लेने से सभी से धोखा ही मिलता है। अल... टीचर से कोई धोखा नहीं मिलता है। टीचर पढ़ाते हैं। पढ़ाई है सोर्स ऑफ इनकम। वो भी हद के अल्पकाल के सुख के लिए है। यह मत है उस बेहद के बाप की। वो ही फिर भिक्षक अर्थात् बेहद का टीचर भी है। वो है हद के बाप, हद के टीचर। बाप से क्या मिलता है? वो शादी कराए देते हैं। विख सेवन कराते हैं। वह पारलौकिक बाप आए अमृत सेवन कराते हैं। फिर यह सद्गुरु भी है सारी दुनिया का, जिसको श्री श्री 108 जगत गुरु कहते हैं। वो यहाँ बैठा है। उनकी ही माला है। पहले2 है परमपिता **P.** फिर प्रजापिता। बाप रचना रचते हैं। बच्चे को गोद में लेते हैं। फिर टीचर की गोद में देते हैं। पहले बाप का हार बनते हैं, फिर टीचर का हार बनते हैं। फिर पिछाड़ी में जब वानप्रस्थ अवस्था होती है तो गुरु का हार बनते हैं। भिन्न2 व्यक्ति... मिलती है। यहाँ भी एक ही निराकार है। वो साकार का आधार ले आए मत देते हैं। श्रीमत भगवत कहा जाता है और जो भी मत देने वाले हैं उन्हों की मत है उल्टी। गुरुलोग भी गंगा स्नान आदि कराते रहते हैं। बाबा कहते हैं कि मैं पाँच—पाँच हज़ार वर्ष बाद आता हूँ जब ड्रामा पूरा होता है। मैं आकर साधारण तन का आधार लेता हूँ। आधार .....। तुम भी पहले नंगे थे। फिर शरीर का आधार लिया; परन्तु तुम गर्भ में जाते हो। बाबा गर्भ में नहीं जाते हैं। बाकी मनुष्यमात्र सभी पुनर्जन्म लेते हैं, गर्भ में आना पड़ता है। मैं एक ही बार आता हूँ। अभी बाबा कॉन्ट्रास्ट दिखलाते हैं श्रीमत से तुम क्या बनते हो और मनुष्यों की मत से क्या बनते आए हो। यह भारतवासी के लिए ही है। आवेंगे भी वो ही जिन्हों का बहुत जन्मों के अंत का जन्म होगा। उन्हों को ही निश्चय होगा बरोबर हम सो देवता थे फिर शूद्र बने। अब फिर शूद्र से ब्राह्मण बनते हैं। शूद्र हैं काँटे। काँटे से कली अर्थात् ब्राह्मण बन फिर देवता फूल बनेंगे। यह हो गई ज्ञान की बातें। गंगा स्नान की बात नहीं है। वो सागर अथवा गंगा कोई चेतन थोड़े ही है जो कहाँ जावेंगी। तुम तो चैतन्य ज्ञान—गंगाएँ हो ना। जब कोई कहे कि फलाने2 कारण से मैं नहीं आ सकता हूँ। अच्छा, अपन पास ज्ञान गंगाओं का निमंत्रण दे बुलाओ तो आ जावेंगी। वो गंगा थोड़ी जावेगी। तुम चैतन्य हो। निमंत्रण पर जाती हो। अच्छा 7 रोज़ के लिए निमंत्रण .....त्रिमूर्ति शिवबाबा बैठ समझाते हैं। वो है बेहद का रचयिता। बेहद का सद्गुरु, सदगति देने वाला भी वो है। सद्गति तो सभी को देंगे ना। एक भी दुर्गति वाला रह जाय तो स्वर्ग कहा न जाय। इस समय सभी मनुष्य पतित हैं, दुर्गति में हैं और अपने ऊपर झूठे नाम रख दिये हैं। कितना धोखा देते हैं। गीता में भी अर्जुन को कहा है ना तुम कितने गुरु कर धोखा खाया है। यह और ही दुर्गति में ले जाते हैं। इसलिए उनको छोड़ो। भल शरीर निर्वाह अर्थ वो जिस्मानी पढ़ाई भी करो, धंधा करो; परन्तु साथ2 यह कोर्स उठाओ। गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान..... चतुर्भज को कमल का फूल देते हैं ना। यह ज्ञान की निशानियाँ हैं ना। इस अन्तिम जन्म में ऐसा कमल फूल समान पवित्र बनना है। बाप कहते हैं मेरे साथ तुम्हारा योग होगा तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। वह है श्रीमत। भगवान ने कभी श्रीमत दी थी? 5000 वर्ष पहले। इसको कहते ही है श्रीमत। गीता मत। गीता में उनकी मत गाई हुई है। अब ..... गीता? बाबा कहते हैं मैं तुम बच्चों को यह ज्ञान देता हूँ। फिर यह प्रायःलोप हो जाता है। फिर यह गीता

आदि शास्त्र कहाँ से आए। बाप समझाते हैं जो भी शास्त्र रचने वाले हैं उन्होंने समझा है आदि सनातनी देवी–देवता धर्म है। तो उनका शास्त्र भी चाहिए ना। तो उन्होंने थोड़ा कुछ बैठ बनाया है। शास्त्र तो पीछे बनते हैं ना ढेर के ढेर तो ऐसी गीता बनाई है। फिर कहते हैं व्यास ने गीता बनाई कृष्ण ने सुनाई थी; परन्तु किस नाम–रूप, देश–काल में? यह है संगम की बात। गीता कोई परंपरा से सतयुग से नहीं चली आती और सभी के शास्त्र चलते आते हैं; क्योंकि वो धर्म भी जीते हैं। देवता धर्म तो प्रायः लोप हो जाता है। सतयुग में कोई भी शास्त्र, मंदिर, टिकाणे आदि रहते नहीं। भक्ति की ही जाती है **P.** से मिलने लिए। समझते हैं भगवान पास जाने से शान्तिधाम में चले जावेंगे। भगवान के घर को शान्तिधाम कहा जाता है। इस मनुष्य सृष्टि को शान्तिधाम नहीं कहा जाता है। भारत सुखधाम था। ऐसे नहीं कहेंगे कि भारत शान्तिधाम था। वहाँ तो कर्म करना पड़ता है; परन्तु माया न होने कारण दुख आदि होता नहीं। वहाँ है प्रालब्ध। देवी–देवताएँ 21 जन्म प्रालब्ध भोगते हैं। अभी तुम 21 जन्मों लिए सुख की प्रालब्ध बनाए रहे हो। यह प्रालब्ध भारतवासियों को ही मिलती है। शास्त्रवादियों ने तो सतयुग–त्रेता में भी रावण, कंस आदि बैठ दिखाए हैं। जैसे दृष्टि वैसी सृष्टि। ऐसे ही फिर शास्त्र बनाते हैं। अभी तुम जीवात्माएँ उस परमपिता **P.** ज्ञान सागर से तुम डायरैक्ट सुन रहे हो। वह है प्रजापिता ब्रह्मा। पति तो फिर स्त्री के पति को कहा जाता है। इस प्रजापिता को कितने बच्चे हैं! कृष्ण को तो प्रजापिता कह न सके। वो एक है जि(स)से मनुष्य सृष्टि पहले–2 रचते हैं। वो भी ट्रान्सफर करते हैं। प्रलय कब होती नहीं। प्रलय हो तो फिर मोक्ष भी मिल सकता। यह सृष्टि चक्कर फिरता ही रहता है। बाबा कहते हैं मैं भी ड्रामा के बन्धन में बाँधा हुआ हूँ। कहते हैं पत्ते2 ईश्वर के हुकुम से हिलते हैं; परन्तु बाप कहते हैं यह ड्रामा अनादि शूट हुआ पड़ा है जो रिपीट होता रहता है। सेकण्ड पास हुआ फिर रिपीट होगा। कितनी ऊँची बात है! अभी तुम निश्चय करते हो बरोबर हमको परमपिता **P.** शिव की श्रीमत मिलती है। ऐसे नहीं कि मेरी मत तुमको मिलती है। यह भी कहते हैं मैं उनकी श्रीमत पर चलता हूँ। भगवान की मत ज़रूर ऊँची होगी ना। वो बाप शिक्षक सद्गुरु भी है। बेहद का ज्ञान सुनाए त्रिकालदर्शी बना देते हैं। खुद आकर माताओं द्वारा पढ़ाते हैं। पढ़ाए करके नर से ना॰ बनाते हैं। पहले2 तो यह निश्चय चाहिए कि हमको श्रीमत मिलती है। वो शिक्षक भी है। वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी सभी सुनाते हैं। कहते हैं मैं पण्डर बनकर आता हूँ। तुमको मुक्ति–जीवनमुक्ति का रास्ता बताता हूँ। योग से मुक्तिधाम जावेंगे और विकर्म विनाश होंगे। कोई कहते हैं ज्ञान तो बहुत अच्छा लगता है; परन्तु दूर2 करते हैं। इसलिए आने में..... अच्छा यह तो चैतन्य ज्ञान गंगाएँ बैठी हैं। तुम अपन पास बलाए लो। तुमको रोज़ आए ज्ञान स्नान करावेंगी, नर से ना॰ बनावेंगी। दिया निमंत्रण खाना भी उनको बाबा से ब्रह्मा भोजन मिलना है। अपने हाथ से पकाए खावेंगे। तुम्हारे घर का अपवित्र भोजन न खावेंगी। यह तो सर्विस करने तैयार है; परन्तु तुमको 8 रोज़ पूरा भट्ठी में पड़ना पड़ेगा। फिर बाहर का कोई ख्याल नहीं करना होगा। तुम्हारे में जो 5 विकारों की कड़ी बीमारी है उनकी दवाई करेंगे। ज्ञान इनजेक्शन लगाते रहेंगे। यह इनजेक्शन है ही ज्ञान सागर पास। जि(स)से आत्मा एवर हेल्दी बन जावेगी। योग और ज्ञान का इनजेक्शन लगते हैं। उनमें तो सूई लगती है, दर्द होता है। इसमें तो दर्द की बात ही नहीं। सिर्फ कहते हैं लाडले बच्चे बाप को याद करो। इस योग से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। यह है सच्चा योग का इनजेक्शन। बिल्कुल सहज है। फिर दूसरा है ज्ञान इनजेक्शन। बीज और झाड़ का राज़ समझना है। यह ह्युमन वैराइटी झाड़ है। कोई गोरे, कोई काले हैं। भारत गौरा था, अभी काला है। ज्ञान चिक्षा पर बैठने से गौरे बनते हैं। फिर काम चिक्षा पर बैठने से काले बन पड़ते हैं। उन्होंने फिर कृष्ण को काला कर दिया है। अभी लॉर्ड कृष्णा सो फिर ऐसा काला होगा क्या? विलायत वाले कहते हैं गॉड कृष्णा हमको चि... चाहिए। समझते हैं यह कृष्ण हेविन का था। गॉड–गॉडेज़

(अधूरी मुरली)